शहरी एवं ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 मुनेन्द्र कुमार
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग
किशन इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर ऐजुकेशन, मेरठ (चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ) उत्तर प्रदेश ।

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत छात्र/छात्राओं मे सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस अध्ययन हेतु ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर 12 वीं कक्षा के 100 विद्यार्थियों जिनमें 50 छात्र व 50 छात्राएँ है, का रेण्डम प्रतिचयन विधि से चयन किया गया। विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता मापने हेतु श्रीवास्तव 2012 द्वारा निर्मित सामाजिक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया। प्राप्ताकों का विश्लेषण कर टी मूल्य ज्ञात किया तथा दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों में अंतर की सार्थकता की जाँच की और पाया गया कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के छात्र/छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता में अन्तर है।

शब्द कुंजीः सामाजिक परिपक्वता, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, छात्र एवं छात्रांऐ।

प्रस्तावना

विकास एक बहुमुखी प्रक्रिया है इसमें बहुत सी बातों का समावेश होता है। विकास के क्रम के बालक का बौद्धिक पक्ष ही नहीं शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक पक्ष भी महत्वपूर्ण है। विकास के यह सभी पक्ष परस्पर सम्बन्धित हैं। परिपक्वता की ओर अग्रसर और विकास करता हुआ बालक न केवल शारीरिक बौद्धिक और संवेगात्मक व्यवहार में बल्कि सामाजिक रूप से भी उन्नति करता है। सामाजिक विकास के फलस्वरूप उसे सामाजिकता की थाती प्राप्त होती है। समाजिकता व्यक्ति के व्यवहार को सकारात्मक एवं नकारात्मक स्वीकृत के साथ अदल–बदल कर प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है। जो कुछ चीजों को स्वीकृत एवं कुछ अन्य चीजों की अस्वीकृत को आगे ले जाती है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व पर सामाजिक समूह, औपचारिकता, अनौपचारिकता के प्रभाव को महत्व देता है। सामाजिक उन्नति का तात्पर्य लाभ या सामाजिक अपेक्षानुसार बर्ताव करने की योग्यता से है। इसको इस प्रकार प्रभावित किया गया है, ''वह प्रक्रिया जिसके द्वारा वृहद श्रेणी के साथ जन्मा व्यक्ति वास्तविक बर्ताव का मार्ग दिखलाता है जो कि बहुत ही सकरी श्रेणी के अन्दर सीमित है। वह श्रेणी जो व्यक्ति के समुदाय के आदर्शों के अनुसार इसके लिए प्रथागत और स्वीकार करने के योग्य है।''

हरलॉक के मतानुसार ''सामाजिक उन्नति का तात्पर्य सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता का प्राप्त करना है। जिसका अर्थ समूह के आदर्शों नैतिकता एवं परम्पराओं के अनुकूल बनाने की प्रक्रिया को सीखना है। और एकता के विचार अन्तः संचार और सहयोग को मन में रखना है। यह बर्ताव के नये तरीकों की उन्नति रुचि में बदलाव और नये मित्रों के चुनाव को शामिल करता है। सामाजिक व्यक्ति वह जो न केवल लोगों के साथ रहता है बल्कि उनके साथ कार्य करना चाहता है।''

जब कोई व्यक्ति स्वेच्छापूर्वक सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेता है, सामाजिक नियमों और प्रयासों के प्रति दृढ निष्ठा रखता है या बिना किसी मानसिक तनाव, द्वन्द्व अथवा असन्तोष के सामाजिक प्रतिबंधों में सीमित होकर आचरण करता है तो यह समझा जाता है कि उसके भीतर सामाजिक परिपक्वता विकसित हो चुकी है, ऐसे व्यक्ति सामाजिक अवसरों पर अपना समय, श्रम या धन व्यय करके भी संतुष्ट और प्रसन्नता का अनुभव करते है। सामाजिक प्रौढता के कारण ही व्यक्ति सरलतापूर्वक सामाजिक प्रयासों और प्रतिमानों को सहर्श स्वीकार कर पाता है और उत्तम सामाजिक समायोजन स्थापित कर सकने में सफल होता है। सामाजिक प्रौढता को सामाजिक विकास की चरम सीमा और सर्वोच्च लक्षण समझा जाता है, परन्तु इस प्रकार की दृष्टि से एक व्यक्ति दूसरे से भिन्न हो सकता है अन्तर्मुखी व्यक्तियों की अपेक्षा बर्हिमुखी व्यक्तियों में सामाजिक प्रौढता अधिक मात्रा में पायी जाती है। इसलिए ऐसे व्यक्तियों के भीतर सामाजिक गुण अधिक सीमा तक विकसित हो पाते है। तथा ऐसे व्यक्ति सामाजिक रूप से परिपक्व कहे जाते हैं।

व्यक्ति में सामाजिक परिपक्वता समायोजनशीलता को मजबूती प्रदान करती है (लोरिस, 1958)। जीवन के प्रारभिंक वर्षों मे सामाजिक परिपक्वता अस्थिर देखी जा सकती है परंतु आयु बढने के साथ–साथ उसमें स्थिरता आती है (टाइबली, 1962)। सामाजिक परिपक्वता में अस्थिरता विभिन्न क्षेत्रों के समायोजन में ंदुर्बलता प्रदान करती है (हरटप, कोट्स एवं केटल, 1967)। व्यक्ति के सामाजिक परिपक्वता की शुद्धता (Accuracy) उसके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के समायोजन को सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

शोध समस्या का अभिकथन

शहरी एवं ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

शोध के उद्देश्य–

1. शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
3. शहरी एवं ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की सामाजिक

परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनायें–इस अध्ययन हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनायें सम्मिलित की गई।

Ho 1- ''ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत छात्रों की सामाजिक परिपक्वता कोई अंतर नहीं होता।''

Ho 2- ''ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं होता।''

Ho 3- ''शहरी क्षेत्र के छात्र और छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नही होगा।

Ho 4- ''ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की परिपक्वता में कोई अंतर नहीं होता।

Ho 5- ''शहरी क्षेत्र के छात्र एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं होता।

Ho 6- ''ग्रामीण क्षेत्र के छात्र और शहरी क्षेत्र की छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं होता।

शोध विधिः–प्रस्तुत अनुसंधान में समस्या में अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शैक्षिक समस्याओं के प्रति सर्वेक्षण विधि व्यापक रूप से प्रयुक्त की जाने वाली विधियों में से एक है।

प्रतिदर्श

प्रस्तुत अध्ययन में मेरठ जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र मे विद्यमान के क्रमशः 10, 10 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है, विद्यालयों का चयन यादृच्छिकरण विधि के माध्यम से किया गया है। इन विद्यालयो से पुनः यादृच्छिकरण विधि से ग्रामीण छात्र 25, ग्रामीण छात्रायें 25, शहरी छात्र 25, शहरी छात्रायें, 25 कुल 100 प्रतिभागियों का चयन किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक परिपक्वता मापनी, श्रीवास्तव 2012 का उपयोग किया गया है। इस उपकरण की परीक्षण पुनः परीक्षण .85 अर्द्ध विच्छेद .76 विश्वसनीयता है।

परिणाम एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन की शून्य परिकल्पनाओं की जाँच करने हेतु टी. परीक्षण (t- Test) का उपयोग किया गया।

शून्य परिकल्पना – 1

"ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्रों के सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं होता।"

चर	स्तर	मध्यमान	मानक विचलन	डी. एफ.	टी– मूल्य	सार्थकता .05 स्तर पर
छात्र						
परिवेश	शहरी	37.2	3.4	48	4.1	सार्थक
	ग्रामीण	47.6	6.2			
छात्रायें						
परिवेश	शहरी	34	0.3	48	6.6	सार्थक
	ग्रामीण	56	3.3			

शहरी						
लिंग	छात्र	39.13	7.2	48	2.75	सार्थक
	छात्राऐं	55	5.1			
ग्रामीण						
लिंग	छात्र	37.6	4.47	48	2.60	सार्थक
	छात्रायें	35	3.32			
शहरी छात्र एवं ग्रामीण छात्रायें						
परिवेश ग लिंग	शहरी छात्र	50.1	9.3	48	5.1	सार्थक
	ग्रामीण छात्राऐं	38	4.4			

तालिका क्रमांक–1 के अनुसार यह उपकल्पना .05 विश्वास स्तर पर निरर्थक सिद्ध होती है। अतः स्पष्ट होता है, कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्रों के सामाजिक परिपक्वता में अंतर होता है।

शून्य उपकल्पना – 2

"ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं होता।"

तालिका क्रमांक–1 के अनुसार यह उपकल्पना .05 विश्वास स्तर पर निरर्थक सिद्ध होती है। अतः सिद्ध होता है, कि ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में अंतर होता है।

शून्य उपकल्पना – 3

"शहरी के छात्र और छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं होता।"

तालिका क्रमांक–1 के अनुसार यह उपकल्पना .05 विश्वास स्तर पर निरर्थक सिद्ध होती है। अतः स्पष्ट है कि शहर के छात्र और छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता में अंतर होता है।

शून्य उपकल्पना – 4

"ग्रामीण क्षेत्र के छात्र और छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं होगा।"

तालिका क्रमांक–1 के अनुसार यह उपकल्पना .05 विश्वास स्तर पर असत्य सिद्ध होती है। ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता में अंतर है।

शून्य उपकल्पना – 5

"शहरी क्षेत्र के छात्र और ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं होता।"

तालिका क्रमांक–1 के अनुसार यह उपकल्पना .05 विश्वास स्तर पर असत्य सिद्ध होती है। शहरी क्षेत्र के छात्र और ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता में अंतर होता है।

शून्य उपकल्पना – 6

"ग्रामीण क्षेत्र के छात्र और शहरी क्षेत्र की छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं होगा।"

तालिका क्रमांक–1 के अनुसार यह उपकल्पना .05 विश्वास स्तर पर असत्य सिद्ध होती है। स्पष्ट है कि, ग्रामीण क्षेत्र के छात्र व शहरी क्षेत्र की छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता में अंतर होता है।

निष्कर्षः–सामाजिक परिपक्वता के विकास में परिवेश पारावरिक वातावरण एवं परिवार के सदस्यों के मध्य अन्तः सम्बन्धों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अभिभावकों को किशोर किशोरियों के सामाजिक परिपक्वता के उत्तम विकास हेतु सुखद एवं सोहाद्रपूर्ण वातावरण प्रदान करना चाहिए जिससे उनमें अच्छी सामाजिकता का विकास हो सके।

भावी शोध हेतु सुझाव

वर्तमान अध्ययन मेरठ जिले के ग्रामीण/शहरी परिवेश मे विद्यमान उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र/छात्राओं पर केन्द्रित है। राज्य के अन्य विभिन्न जिलों में विद्यमान विभिन्न स्तर के विद्यालयीन छात्र/छात्राओं के विभिन्न जनसांख्यिकिय, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक चरो की दृष्टि मे अध्ययन किया जा सकता है। सामाजिक परिपक्वता एवं विभिन्न मनोवैज्ञानिक चरों के मध्य सहसंबंध भी ज्ञात किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ साहित्य

1. Andrew Sayer "Method in Social Secience: A Realist Approach" II Edition, London, Now York, 1997.
2. Best, John W. & James V. Kahn "Research in Education, New Delhi Prentice Hall of India Private Ltd. 1986.
3. Good, Carter V. & Dougeles B.S "Methods of Research: Education Psychological & Sociological" New York (USA), Appleton Century.
4. Kerlinger, Fred N. " Foundations of Behavioral Research" II Edition, Delhi Surjeet Publications,

1983.

5. Skineer, Charls E. "Educational Psychology" III Edition, New Delhi Prentice Hall of India Limited, 1977.
6. Anand, A. and Bhanot, S. (2007). Effect of socio-personal and economic factors on social maturity of adolescent girls of rural and urban areas – A comparative study. Indian J. Social Res., 47: 41-44.
7. A.S. Arul Lawrence and Rev. Dr. I. Jesudoss.(2011). Relationship between Social Maturity and AcademicAchievement of Higher Secondary School Students. International Journal of Educational Administration.ISSN 0976-5883 Volume 3, Number 3 (2011), pp. 243-250© Research India Publicationshttp://www.ripublication.com
8. Diwan, R.(1998). The socio-economic status and social maturity. The Progress of Education. LXXIII(5), 117-119.
9. Kumar, D. and Ritu (2013). SOCIAL MATURITY OF SENIOR SECONDARY SCHOOL STUDENTS IN RELATION TO THEIR PERSONALITY. A Publication of TRANS Asian Research Journals AJMR ,Asian Journal of Multidimensional Research Vol.2 Issue 8, August 2013, ISSN 2278-4853.
10. Rani Swarupa, G. and Prabha Rathna, C. (2008). Social maturity levels of adolescents belonging to different parenting styles.Psycho-lingua, 38 (2), 185-188, Agra: Psycho linguistics association of India.
11. Raj, M.(1996).Encyclopedia Dictionary of psychology and Education,New Delhi:Anmol Publications.
12. Sharma, B. and Shah, J.K. (2012). A study on Social Maturity, School Adjustment and Academic achievement among residential school girls. Journal of Education and Practice www.iiste.org ISSN 2222-1735 (Paper) ISSN 2222-288X (Online) Vol 3, No 7, 2012.69
13. Singh, R. , Pant,K. and Valentina,L.(2013) Gender on Social and Emotional Maturity of Senior School Adolescents: A Case Study of Pantnagar. Stud Home Com.Sci,7(1):1-6(2013).
14. Singh, S. and Thukral, P. (2010). Social Maturity and Academic Achievement of High School Students. Canadian Journal on Scientific and Industrial Research Vol. 1, No. 16
15. Wentzel, K. R. (1991). Relations between social competence and academic achievement in early adolescence. Child Development, 62, 1066-1078